TOPIC-4

UPPCS GS (PAPER-IV)

संवेगात्मक बुद्धि (भावनात्मक प्रज्ञता) (Emotional Intelligence)

संवेगात्मक बुद्धि (भावनात्मक प्रज्ञता): अवधारणाएँ तथा प्रशासन और शासन व्यवस्था में उनके उपयोग और प्रयोग।
Emotional Intelligence: Concepts and their Utilities and Application in Administration and Governance.

भावनात्मक बुद्धि या सांवेगिक या संवेगात्मक बुद्धि या सांवेगिक विवेक *(Emotional Intelligence)*

भूमिका *(Introduction)*

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में अपनी सोच एवं कृत्यों द्वारा दूसरों के व्यवहार को प्रभावित करता है और उनके व्यवहार से प्रभावित भी होता है। हमें परिवार, समाज एवं कार्य स्थल पर नाना प्रकार की समस्याओं, दबावों एवं चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इस परस्पर व्यवहार के व्यवस्थापन पर सामाजिक संबंध निर्भर करते हैं। इस परस्पर व्यवहार में रूचियों, अभिवृत्तियों *(Attitudes)*, आदतों के साथ-साथ जो तत्व सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, वह है- संवेगात्मक बुद्धि। इसकी कमी के कारण ही अनेक व्यक्ति बौद्धिक रूप से सक्षम होते हुए भी अच्छा अंतर्वैयक्तिक *(Interpersonal relationship)* संबंध एवं अन्तर्रावैयक्तिक संबंध नहीं बना पाते हैं।

जीवन में सफल होने के लिए उच्च बुद्धि लब्धि (I.Q.), विद्यालयीय परीक्षाओं में अच्छा निष्पादन या प्रतियोगी परीक्षाओं में सफल हो जाना ही पर्याप्त नहीं है। दूसरे शब्दों में केवल शैक्षणिक उपलब्धि मात्र से सफल व्यावहारिक जीवन की आशा नहीं की जा सकती है। परम्परागत रूप से यह माना जाता था कि पढ़ाई-लिखाई में तेज होने का मतलब है कि वह जीवन में सफल होगा और बेहतर तरीके से कार्य निष्पादन करेगा। परंतु यह बात पूरी तरह सत्य नहीं है। कई बार पढ़े-लिखे लोग छोटी-छोटी बात पर उत्तेजित हो जाते हैं, नई कठिनाई और चुनौतियों के आते ही हताश और निराश हो जाते हैं, जज्बाती होकर कदम उठा लेते हैं, जैसे-

- गुस्से में आकर किसी को गाली देना, मार देना आदि
- किसी से झगड़ा होने या किसी कार्य में असफल होने पर, निराश या हताश होकर आत्महत्या कर लेना।
- भय या दबाव में आकर मानसिक रूप से असंतुलित होकर अच्छे अवसर को खो देना।

ऐसी घटनायें समाज में आये दिन होती रहती हैं। ये घटनायें मूलतः सांवेगिक बुद्धि के अभाव का द्योतक हैं। हम कई बार अपने संवेगों को पहचान नहीं पाते, उस पर नियंत्रण नहीं रख पाते, दूसरों की भावनाओं को नहीं समझ पाते। उनकी थोड़ी सी गलती पर गुस्से में आकर प्रतिक्रिया कर देते हैं और बाद में पछताते हुए कहते हैं कि-

- ये मैंने क्या किया?
- मुझे यह काम नहीं करना चाहिए,
- मैं थोड़ा भी सचेत रहता तो यह घटना नहीं घटती आदि।

पिछले दो दशकों के शोधों से यह निष्कर्ष स्थापित हुआ है कि जीवन में सफलता एवं कार्य-स्थल पर प्रभावपूर्ण कार्य निष्पादन में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक संवेगात्मक बुद्धि है। संवेगात्मक बुद्धि सम्यक् निर्णयन, समायोजन एवं प्रभावी कार्य-निष्पादन में इसलिये सहायक है क्योंकि यह ***कई निर्णायक कौशलों या योग्यताओं का समूह*** है। इसके निम्नलिखित अवयव हैं-

- अंतर्वैयक्तिक कौशल	- सामाजिक जागरूकता	- प्रतिउत्पन्नमतित्व
- संवेगों को पढ़ना-समझना	- आवेग नियंत्रण की योग्यता	- आत्म अभिप्रेरणा
- परानुभूति	- संवेग प्रबंधन	- टीम वर्क की भावना
- प्रभावपूर्ण संप्रेषण कौशल	- संबंध प्रबंधन	- आत्म जागरूकता

- आत्म नियमन
- प्रभावपूर्ण कार्य निष्पादन
- अनुकूलनशीलता
- स्वयं को और दूसरों को समझने की योग्यता
- संकट में धैर्य
- अनुनयशीलता (Persuasiveness) आदि

आधुनिक मानव समाज में शांति, व्यवस्था, कल्याण, विकास तथा सृजनात्मक कार्यों का दायित्व सरकार के कंधों पर होता है। सरकार का आशय शासन करने के लिए बनाये तंत्र से होता है जबकि शासन से तात्पर्य यह है कि- यह तंत्र किस प्रकार काम कर रहा है?

सभी शासन जनता का शासन है। सभी लोक सेवा जनता की सेवा है। शासन की अवधारणा लोक प्रशासन की मशीनरी और लागत-लाभ विश्लेषण से अधिक व्यापक है। शासन को संबंधों (Relationships) के संदर्भ में व्याख्यायित किया जाता है। ***शासन सरकार एवं नागरिकों के मध्य के संबंध के स्वरूप को इंगित करता है।*** यह ***संबंध ही शासन का हृदय*** *(Heart of governance)* है। जिस सीमा तक लोक प्रशासन जनता के दिल और दिमाग को प्रतिबिंबित करता है, वही शासन है। इस संबंध का घनत्व एवं सार्थकता बहुत हद तक जनता, प्रशासक एवं नेता के उच्च संवेगात्मक बुद्धि पर निर्भर करती है।

संवेगात्मक बुद्धि दो शब्दों के योग से बना है- 1. संवेग 2. बुद्धि

1. ***'संवेग'*** का अंग्रेजी पर्याय *Emotion* है, जिसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा के ***इमोवेयर*** *(Emovere)* शब्द से हुई है, जिसका शाब्दिक अर्थ है- *उत्तेजित करना या गतिशील करना/विचलित करना।* वस्तुत: संवेग व्यक्ति की संपूर्ण शारीरिक एवं मानसिक क्रियाओं को प्रभावित करता है। यह व्यक्ति के व्यवहार को सक्रिय व निर्देशित करता है। शब्द ***'E-motion'*** का तात्पर्य ऊर्जा *(Energy)* से है, जो व्यक्ति को गतिशील *(Motion)* बनाता है।

   यहाँ ***संवेग का आशय*** हर्ष, विषाद *(Distress)*, प्रेम, भय, क्रोध, आश्चर्य, घृणा *(Disgust)*, कामुकता (Lust) आदि से है जो चेतना की भावात्मक अनुभूति *(Affective Experience)* से संबंधित है। इसकी अभिव्यक्ति व्यक्ति के बाह्य व्यवहार में होती है। संवेग व्यक्ति के शारीरिक और मानसिक विकास के साथ-साथ उसके क्रियाकलापों को भी प्रभावित करता है।

2. ***बुद्धि (Intelligence)*** मनुष्य की वह विवेक पूर्ण क्षमता है जिसका आशय सीखने, उद्देश्यपूर्ण ढंग से काम करने, तर्कपूर्ण ढंग से सोचने एवं वातावरण के साथ प्रभावपूर्ण ढंग से अनुक्रिया करने की योग्यता से है। इसमें जीवन की नवीन समस्याओं, चुनौतियों एवं परिवर्तित स्थितियों को समझने, उनका सामना करने, उपलब्ध संसाधनों का प्रभावी ढंग से उपयोग करने, समस्या का समाधान करने तथा उनके अनुसार अच्छे प्रकार से समायोजन करने की सामान्य मानसिक योग्यता का भाव निहित है।

संवेगात्मक बुद्धि का आशय

संवेगात्मक बुद्धि से तात्पर्य व्यक्ति विशेष की उस समग्र क्षमता से है, जो उसे उसकी विचार प्रक्रिया का उपयोग करते हुए अपने तथा दूसरों के संवेगों को जानने, समझने तथा प्राप्त सूचनाओं के अनुसार अपने चिंतन और व्यवहार में सामंजस्य स्थापित करते हुए वांछित अनुक्रिया करने में सक्षम बनाता है। संक्षेप में ***यह संवेगों एवं आवेगों का बौद्धिक नियमन एवं प्रबंधन है।*** इसमें हृदय (दिल) और मस्तिष्क (दिमाग) के मध्य संतुलन एवं सामंजस्य का भाव है ताकि विभिन्न परिस्थितियों में यथोचित व्यवहार हो सके।

सांवेगिक बुद्धि या भावात्मक प्रज्ञता का आशय

↓

अपने एवं अन्य व्यक्तियों के भावों एवं संवेगों को

↓

- पहचानने (Perceiving) → शारीरिक हाव-भाव, बोलने का अंदाज आदि
- उसका अपने विचार प्रक्रिया से समन्वय करने (To integrate it in thought)
- समझने, मोनीटर करने (Understanding & Monitoring) → संवेगों की प्रकृति, उसकी तीव्रता और परिणामों से अवगत होना
- प्रबंधन (Managing) करने की क्षमता से है। → संवेगों में सामंजस्य स्थापित करते हुए वांछित अनुक्रिया

भावात्मक प्रज्ञता से युक्त व्यक्तियों की विशेषताएँ

- अपनी भावनाओं और संवेगों को जानना, समझना और उसके प्रति संवेदनशील होना।
- दूसरे व्यक्तियों के विभिन्न संवेगों को उनके शारीरिक हाव-भाव, भाषा, बोलने के अंदाज पर ध्यान देते हुए जानना और उसके प्रति संवेदनशील होना।
- अपने संवेगों को अपने विचारों से संबद्ध करना ताकि समस्या, समाधान तथा निर्णय करते समय उन्हें ध्यान में रखा जा सके।
- अपने संवेगों की प्रकृति, उसकी तीव्रता और उसके परिणामों से अवगत होना (संवेगों का मूल्यांकन)।
- अपने संवेगों का नियमन एवं प्रबंधन करना अर्थात् अपने संवेगों और उनकी अभिव्यक्तियों को दूसरों से व्यवहार करते समय नियंत्रित करना ताकि शांति और सामंजस्य की प्राप्ति हो सके।
- विभिन्न उपायों से व्यक्ति के सांवेगिक बुद्धि क्षमता में विकास किया जा सकता है।

Peter Salovey के अनुसार उच्च सांवेगिक बुद्धि वाले व्यक्ति की निम्न पाँच विशेषतायें पाई जाती हैं-

1. वे अपने संवेगों के बारे में जानते हैं। *(Knowing one's emotions)*
2. वे स्वयं संवेगों का प्रबंधन कर सकते हैं। *(Managing emotions)*
3. स्वयं को अभिप्रेरित कर सकते हैं। *(Motivatings one self)*
4. दूसरों के संवेगों की प्रत्यभिज्ञा / पहचान कर सकते हैं। *(Recognizing emotions in others)*
5. संबंधों को बनाये रख सकते हैं। *(Holding relationship)*

उच्च सांवेगिक बुद्धि वाले व्यक्ति की उपरोक्त सभी विशेषताएँ दिखाई देती हैं।

KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform © KHAN SIR

1. ***भावों या संवेगों को सही तौर पर पहचानना (प्रत्यक्षीकरण)/पढ़ना:*** लोगों को सुनकर या उनके शारीरिक हाव-भाव (Body language) को देखकर उनके निहित भाव को पहचान लेने की योग्यता। एक प्रशासनिक अधिकारी के लिए यह योग्यता आवश्यक है, क्योंकि वह लोगों की भावनाओं को पढ़कर तदनुरुप अनुक्रिया (Response) कर सकता है। इससे समस्या का समुचित समाधान निकालने में मदद मिलती है।
2. ***भावनाओं का उपयोग:*** संज्ञानात्मक सोच में उपयोग करना। जैसे- किसको महत्व देना है, किसके प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त करनी है। यह योग्यता भावों को पहचानकर उनका उपयोग समस्या के निराकरण में करता है। वह व्यक्ति की मनोदशा का प्रयोग कार्यस्थल पर समस्याओं के शीघ्रतापूर्वक समाधान में कर सकता है।
3. ***भावनाओं को समझना:*** भावनाओं के अर्थ को समझना। यह पक्ष संवेगात्मक बुद्धि की संज्ञानात्मक पक्ष से संबंधित है। इसमें हम संवेगात्मक सूझ-बूझ का परिचय देते हुए समस्या का हल करते हैं।
4. ***भावनाओं को प्रबंधन* (Manage) / *नियमन* (Regulation) *करना:*** यह घटक उस योग्यता को इंगित करता है, जिसमें व्यक्ति अपने तथा अन्य व्यक्तियों के संवेगों का प्रबंधन करता है। यहाँ इस बात पर बल होता है कि वह कितनी अच्छी तरह स्वयं एवं अन्य व्यक्तियों के प्रति व्यवहार का संचालन कर रहा है। इसके अंतर्गत व्यावहारिक कार्यकुशलता सम्मिलित होती है। इस पक्ष में अपनी भावनाओं को नियंत्रित करना, विनियमित करना, दूसरों के संवेगों के प्रति प्रतिक्रिया करते वक्त– प्रतिक्रिया का ढंग क्या हो? प्रतिक्रिया की मात्रा क्या हो आदि को ध्यान में रखा जाता है। यह घटक टीम वर्क एवं नेतृत्व की भावना को बढ़ाने में सहायक है।

केस स्टडी: *नेपोलियन की सेना जा रही थी, सामने आलप्स पर्वत खड़ा था, नेपोलियन की सेना रूकी, निराशा का वातावरण पैदा होने लगा। नेपोलियन ने आगे बढ़ते हुए कहा– सामने कोई भी बाधा नहीं, इसे पार करना असंभव नहीं। देखते ही देखते नेपोलियन की सेना आल्प्स पर्वत पार कर गई।*

इसी प्रकार टीम के लीडर को यह चाहिए कि वह सदस्यों के उत्साह एवं मनोबल का ध्यान रखे। निराशा और हताशा के वातावरण में स्वयं आत्मविश्वासपूर्वक आगे बढ़ते हुए पहल करे और सदस्यों में आशावाद का संचार करे।

भारतीय परंपरा

यद्यपि संवेगात्मक बुद्धि की अवधारणा नयी है परन्तु इसका मूल भाव एवं संबंधित अवयव भारतीय परंपरा में अनेक स्थलों पर दिखाई देता है। जैसे-यहां यह कहा गया है कि-

मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्ना अर्थात् अलग-अलग मस्तिष्क में अलग-अलग विचार निवास करते हैं। ऐसी स्थिति में हमें दूसरों के विचारों एवं विश्वासों का भी सम्मान करना चाहिए। विशेष रूप ऐसे विश्वास जहां आस्था और भावना दृढ़ता से जुड़ी हो। अगर कोई व्यक्ति रूढ़िवादी, अंधविश्वासी तो भी हमें उसका मनोवृत्ति परिवर्तन करते समय उसकी भावनाओं और संवेगों को ध्यान में रखकर संदेशों एवं तार्किक युक्ति का प्रयोग करना चाहिये। अपने विचारों, विश्वासों और मान्यताओं को बलपूर्वक दूसरों पर लागू करने पर सामाजिक समरसता एवं भाईचारे पर असर पड़ सकता है।

'सत्यं ब्रुयात् प्रियं ब्रुयात् न ब्रुयात् अप्रिय सत्यम्' अर्थात् सत्य बोलें, प्रिय बोलें, अप्रिय सत्य न बोले। यह संप्रेषण कौशल एवं संबंध प्रबंधन कौशल को इंगित करता है ताकि व्यक्ति का अंतर्वैक्तिक संबंध सकारात्मक बना रहे।

भारतीय परंपरा में भर्तृहरि के नीतिशतक, हितोपदेश, पंचतंत्र, तेनालीराम और अकबर-बीरबल की कहानियों आदि में इससे संबंधित विवेचन दिखाई देता है।

गीता में यह कहा गया है कि इन्द्रियाँ घोड़ों के समान हैं, जो नाना प्रकार के संवेगों और इच्छाओं को उत्पन्न करती है। इन इन्द्रियों को विवेकरूपी सारथी के द्वारा ही संचालित होना चाहिए।

बौद्ध दर्शन में अष्टांगिक मार्ग की अवधारणा है जिसमें एक *सम्यक् व्यायाम* भी है, जिसमें यह कहा गया है कि हमें सदैव अच्छी भावनाओं को प्रोत्साहित करना चाहिए, अच्छे विचारों को ग्रहण करना चाहिए, बुरी भावनाओं को हटाने एवं नियंत्रित करने का प्रयास करना चाहिए।

वर्तमान संदर्भ:

संवेगात्मक बुद्धि की अवधारणा को लोकप्रिय बनाने का श्रेय *अमेरिकन मनोवैज्ञानिक* ***डेनियल गोलमैन*** (Daniel Goleman) को जाता है। उनकी 1995 में प्रकाशित एक पुस्तक "*संवेगात्मक बुद्धि: बुद्धि लब्धि से अधिक महत्वपूर्ण क्यों*" *(Emotional Intelligence: Why it can matter more than I.Q.)* ने जीवन में संवेगात्मक बुद्धि के महत्व को चर्चा का विषय बना दिया तथा तभी से इसे सफल जीवन तथा प्रभावी एवं कुशल प्रशासन के एक महत्वपूर्ण घटक या कारक के रूप में स्वीकार किया जाने लगा।

अमेरिकन मनोवैज्ञानिक डेनियल गोलमैन ने अपनी पुस्तक 'What makes a Leader' (1998) में भावनात्मक बुद्धि के अंतर्गत ***पाँच प्रकार*** की क्षमताओं को सम्मिलित किया है-

1. ***आत्म-जागरूकता (Self-awareness):*** उच्च सांवेगिक बुद्धि से युक्त व्यक्ति अपने संवेगों, क्षमताओं एवं कमियों को पहचानता है। कठिनाइयों में भी वह आत्मविश्वास के साथ निर्णय लेते हुए, अपनी कमियों को सुधारते हुए, आगे बढ़ने का प्रयास करता है। इसमें तीन तत्व सम्मिलित हैं। ये हैं-

   (i) संवेगात्मक जागरूकता (Emotional Awareness) (ii) विशुद्ध स्व-आकलन (Accurate self-assessment)

   (iii) आत्मविश्वास (self-confidence)

   प्रशासनिक अधिकारी को जन-सुनवाई के समय, आपदा या आतंकवादी हमलों आदि के समय भी आत्मविश्वास के साथ अपनी क्षमताओं पर भरोसा करते हुए राहत कार्यों को संपादित करना चाहिए, रणनीति बनाकर अनुक्रिया करनी चाहिए।

2. ***आत्म-नियमन (Self-management):*** अपने नकारात्मक संवेगों (क्रोध, भय आदि) को नियंत्रित और निर्देशित करने, भावनात्मक दबावों को सहने तथा नई चुनौतियों और परिस्थितियों के अनुसार अपनी भावनाओं को व्यक्त करने की क्षमता ही आत्म-नियमन है।

   आत्म-नियमन की अवधारणा में- आत्म-नियंत्रण (विघटनकारी संवेगों एवं आवेगों का प्रबंधन), विश्वसनीयता, कर्तव्यनिष्ठता (वचनों और प्रतिज्ञाओं का निर्वाह, कार्य के प्रति उत्तरदायी), अनुकूलनशीलता (परिस्थितियों के अनुसार व्यवहार में लोचकता) एवं नवाचार के प्रति उत्सुकता (नवीन विचारों, नवीन सूचनाओं, नवीन समाधानों के प्रति सकारात्मक भाव) का तत्व सम्मिलित होता है।

   कई लोगों के जीवन में अनेक समस्याएं हैं फिर भी वे लक्ष्य के प्रति सदैव प्रयासरत रहते हैं। वे बड़ी समस्या को भी चुनौती के रूप में लेकर सामना करते हैं। दूसरी ओर इस क्षमता से रहित व्यक्ति छोटी समस्या या वाद-विवाद होते ही पूरी तरह अपना धैर्य और आपा खोकर गलत शब्दों का प्रयोग करता है, गलत काम कर डालता है। ऐसे लोगों में आत्म नियमन का अभाव होता है।

3. ***सामाजिक जागरूकता या बोध (Social Awareness):*** इसके अंतर्गत परानुभूति, संगठनात्मक बोध, सेवा-उन्मुखता का तत्व सम्मिलित है। व्यक्ति दूसरे के व्यवहार, दृष्टिकोण, मूड एवं प्रवृत्तियों को समझकर तदनुरूप आचरण करता है। सामाजिक दक्षता के दो घटक हैं-

   (i) ***सामाजिक जागरूकता (Social awarenees):*** इसके द्वारा व्यक्ति दूसरों के विचारों और भावनाओं एवं अपेक्षाओं को समझ लेता है। दूसरे क्या कह रहे हैं, क्या कहना चाह रहे हैं, इसको वह ध्यानपूर्वक सुनता है और उनकी मन:स्थिति को जानकर तदनुरूप कदम उठाता है।

   (ii) ***संबंधों का प्रबन्धन (Relationship management):*** इसके अंतर्गत भावनाओं को नियंत्रित करना तथा उपयुक्त समय पर भावनाओं की समुचित अभिव्यक्ति का भाव सम्मिलित है। प्रशासनिक क्षेत्र में बेहतर एवं प्रभावी कार्य-निष्पादन तथा निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु उच्चस्थ अधिकारियों एवं अधीनस्थों के साथ बेहतर संबंध बनाकर टीम-भावना का विकास किया जा सकता है।

4. ***परानुभूति (Empathy):*** निर्णय लेते समय अन्य लोगों की भावनाओं को समझना और उनके संवेगों को महसूस करना ही परानुभूति है। परानुभूति अपने आस-पास रहने वालों की कमियों, जरूरतों एवं दृष्टिकोण को पहचानने एवं समझने की योग्यता है। परानुभूति से युक्त व्यक्ति दूसरों की भावनाओं को अच्छी तरह समझता है, उनके साथ तादात्मीकरण करने की योग्यता रखता है। यही कारण है कि परानुभूतियुक्त व्यक्ति अपने संबंधों का बेहतर तरीके से प्रबंधन करता है।

5. ***उत्प्रेरणा (Motivation):*** लक्ष्य की प्राप्ति हेतु उत्प्रेरित होकर सोच-समझकर कदम उठाते हैं। वे चुनौतियों को स्वीकार करते

हैं। नई पहल करते हैं, योजना बनाते हैं तथा आशावादी सोच के साथ प्रभावपूर्ण ढंग से अपने कार्य का संपादन करते हैं।

आपदा राहत कार्य संपादित करते समय उत्प्रेरणा की मदद, जैसे-

- फंसे लोग हमारे देश के नागरिक है।
- हम सब भाग्यशाली हैं कि हमें यह कार्य सौंपा गया है।
- हमारे थोड़े प्रयास से कई लोगों की जान बच सकती है।
- यह हमारे लिए एक चुनौती है आदि।

भावनात्मक बुद्धि का प्रशासन और शासन में उपयोग और प्रयोग
(Utilities and Application of emotional Intelligence in Administration and Governance)

सांवेगिक बुद्धि की उपयोगिता एवं महत्व: प्रशासन में अनेक अवसरों पर अधिकारियों को लोगों से संवाद करना पड़ता है। संवेगात्मक बुद्धि युक्त अधिकारी उनकी समस्याओं एवं चिंताओं को धैर्यपूर्वक सुनता और समझता है। वह न तो असंवेदनशील होकर निष्क्रिय होता है और न ही भावनाओं में बहकर कोई निर्णय लेता है। वह यथोचित प्रक्रिया का पालन करते हुए, निर्णय के प्रभाव और दूसरों की अपेक्षाओं को ध्यान में रखकर निष्पक्ष अनुक्रिया करता है। यदि अधिकारी में सांवेगिक बुद्धि की कमी हो तो फिर न तो वह उनकी भावनाओं को ठीक से समझ पायेगा और न ही उनकी समस्याओं के निदान हेतु कोई सम्यक् कदम उठा पायेगा।

केस स्टडी: जैसे यदि 'X' नामक महिला का पुत्र सड़क दुर्घटना में मारा जाता है। वह महिला अपने सगे संबंधियों के साथ घटनास्थल पर जाकर आवागमन को ठप कर देती है। नजदीकी थाने में जैसे ही यह सूचना पहुँचती है तो वहाँ से पुलिस फोर्स एवं सिटी एस.पी. तत्काल वहाँ पहुँचते है। यहाँ किस तरह से कार्यवाही की जाए, यह सिटी एस.पी. के संवेगात्मक बुद्धि पर निर्भर करता है। यहाँ कई विकल्प हो सकते हैं। जैसे-

1. वहाँ पहुँचते ही सड़क जाम को हटाने के लिए लाठी चार्ज की अनुमति देना क्योंकि सड़क जाम करना गैर-कानूनी है।
2. सड़क जाम कर रहे लोगों को धमकी भरी भाषा में अलग हटने का निर्देश देना।
3. पीड़ित महिला एवं उनके परिजनों से दुख एवं सहानुभूति प्रकट करते हुए दोषी को शीघ्र गिरफ्तार करने का आश्वासन देना एवं उन पर समुचित कार्यवाही करने का भरोसा दिलाना और इस प्रकार उन्हें विश्वास में लेकर सड़क जाम को खुलवाने का प्रयास करना।

यहाँ पहले दो विकल्पों का परिणाम नकारात्मक हो सकता है, क्योंकि जिस महिला का पुत्र दुर्घटना में आहत हुआ है उस समय उसका और उसके सगे संबंधियों का गुस्सा एवं क्रोध तीव्र तरीके से अभिव्यक्त होगा। ऐसी स्थिति में आरम्भ में ही प्रथम दो विकल्पों को अपनाना स्थिति को और कठिनाई पूर्ण बना सकता है तथा प्रतिक्रिया स्वरूप कुछ और जानें भी जा सकती हैं। यहाँ तीसरा विकल्प सांवेगिक बुद्धि की मांग के अनुसार उचित है।

आज प्रशासकों को एक ऐसे वातावरण में काम करना पड़ता है जहाँ उन्हें विभिन्न प्रकार की समस्याओं, चुनौतियों एवं दबावों का सामना करना पड़ता है। जैसे-

- क्षेत्रवाद एवं भाषावाद की बढ़ती समस्या
- सरकार एवं पुलिस के विरूद्ध प्रदर्शन।
- बेरोजगारी, नवयुवकों में बढ़ती हिंसात्मक प्रवृत्ति।
- रूढ़िवादी प्रवृत्ति, सांप्रदायिकता एवं वैमनस्य का उभार।
- शासन *(Governance)* के प्रति जनता की अपेक्षाएँ, सरकारी नीतियों एवं योजनाओं का लाभ लक्षित व्यक्ति तक पहुँचाना।
- बदलता सामाजिक ढाँचा एवं मूल्य।
- जनता की मूलभूत आवश्यकताओं जैसे- पेयजल, आवास, भोजन, बिजली आदि की अपर्याप्तता।
- बढ़ती आर्थिक विषमता।
- सूचना तकनीक का प्रयोग कर जनता को जागरूक करना, उसे सहभागी बनाना और साथ ही प्रशासन में पारदर्शिता एवं

उत्तरदायित्व को बढ़ावा देना।

- छोटी-छोटी बातों पर सड़क जाम करना, भीड़ इकट्ठा कर उग्र रूप अपनाना, धार्मिक क्रियाकलापों के दौरान अन्य वर्ग के लोगों के साथ असुविधा पैदा करना।
- राजनीतिक दबाव।

उपरोक्त कठिनाइयों एवं चुनौतियों से सांवेगिक बुद्धि युक्त प्रशासक अधिक कुशलता पूर्वक निपट सकता है और इन चुनौतियों एवं दबावों के बीच भी रचनात्मक तरीके से प्रभावपूर्ण कार्य कर सकता है। छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावी जिले दांतेवाड़ा में रहकर उत्कृष्ट विकासात्मक कार्यों हेतु 2013 में व्यक्तिगत श्रेणी में भारत के सबसे अच्छे प्रशासक का पुरस्कार ओ. पी. चौधरी को दिया गया है।

संवेगात्मक बुद्धि निम्न रूपों में प्रभावी और कुशल प्रशासन में मददगार है-

1. संवेगात्मक बुद्धि, प्रशासनिक अधिकारी में सहयोग, समायोजन, संवेदनशीलता, अभिप्रेरणा, परानुभूति, संबंध-प्रबंधन एवं नेतृत्व की भावना एवं क्षमता बढ़ाती है।
2. उच्च संवेगात्मक बुद्धि से युक्त अधिकारी विपरीत परिस्थितियों में भी निराश नहीं होता है। समस्याओं को चुनौती के रूप में लेता है। स्वयं पहल करते हुए अपने सहकर्मियों को भी अभिप्रेरित करता है और जिम्मेदारी पूर्वक अपने लक्ष्य को पूरा करने का प्रयास करता है। इस क्रम में अच्छे कर्मों के लिए प्रोत्साहन और गलत कार्यों में संलग्न कर्मियों को हतोत्साहित करता है।
3. लोगों की समस्याओं को धैर्यपूर्वक सुनता है, संवेदनशीलता का परिचय देता है तथा भावनाओं में बहकर, जज्बाती होकर कोई कदम नहीं उठाता।
4. जनता के लिए उपयोगी कार्यक्रमों में उनकी भागीदारी बढ़ाने के लिए उनको प्रोत्साहित करता है।
5. नवाचार के लिए जागरूक एवं प्रयत्नशील रहता है।

संवेगात्मक बुद्धि की उपयोगिता

1. कोई व्यक्ति जीवन में कितना सफल हो सकता है, इसकी भविष्यवाणी संवेगात्मक बुद्धि E.Q. द्वारा की जा सकती है।
2. संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति के जीवन को सुखमय व शांतिप्रद बनाने में सहायक होती है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों एवं कार्य-स्थल पर मिलने वाली सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका इसी की होती है।
3. कामकाज की दुनिया में निपुणता तथा दक्षता प्राप्त कराने में भी संवेगात्मक बुद्धि का ही अधिक योगदान पाया जाता है।
4. किसी की संवेगात्मक बुद्धि उसे जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में वांछित सफलता प्राप्त करने में मदद करती है।
5. अपने तथा दूसरों के संवेगों के प्रति सही जानकारी एवं सजगता, संवेगों का उचित प्रबंध दूसरों के साथ संबंधों को ठीक प्रकार से बनाये रखने जैसे कार्यों में संवेगात्मक बुद्धि ही सबसे अधिक सहायक होती है।
6. संवेगों का अनुचित दमन नहीं होना चाहिए। क्रोध, घृणा, निराशा, भय आदि भी समय और परिस्थिति अनुसार उतने ही आवश्यक और हितकारी होते हैं जितने कि साहस, प्रेम, शांति। हमें अपने संवेगों को उचित समय पर, उचित रूप में अभिव्यक्त करने का ढंग आना चाहिए। ग्रीक दार्शनिक *अरस्तू* का कथन है- *कोई भी व्यक्ति क्रोध कर सकता है- यह बहुत आसान है परंतु सही व्यक्ति के साथ, सही मात्रा में, सही समय पर, सही प्रयोजन हेतु, सही ढंग से, क्रोध करना आसान नहीं है।*
7. उच्च संवेगात्मक बुद्धि से युक्त अधिकारी राष्ट्रहित में महत्वपूर्ण किसी मिशन को पूरा करते समय अपनी टीम के लिए वैसे अधिकारियों को चयनित करता है जो तेजतर्रार हो। उसे पता होता है किस कार्य के लिए कौन अधिक उपयुक्त होगा, उसकी कार्यशैली क्या है? उसे कैसे उत्प्रेरित किया जा सकता है, किसी कार्य में उसका कितना सहयोग प्राप्त किया जा सकता है।

भावात्मक प्रज्ञता लोगों में किस प्रकार विकसित की जा सकती है?
How Emotional Intelligence can be developed in people?

संवेगात्मक बुद्धि को विभिन्न उपायों से विकसित कर व्यक्तियों के जीवन को सुखमय और शांतिमय बनाने में मदद की जा सकती है।

- प्रेरक प्रसंग एवं सफल लोगों की जीवनी का अध्ययन
- हितोपदेश एवं पंचतंत्र की कहानियों का पठन एवं नाटक के रूप में मंचन
- आत्म मूल्यांकन:
    - अपनी कमियों को जानना, अपनी क्षमताओं को जानना
    - असफलता के कारणों को जानना
    - उसे दूर का उपाय निकालना
    - गलती होने पर मनन करना *(Reflecting thinking)* कि गलती क्यों हुई, कैसे हुई, ऐसा संकल्प करना कि आगे इस गलती को नहीं दोहराना है।
- *परिस्थितियाँ निर्मित करके यह पूछा जाये कि आप ऐसे में क्या निर्णय लेंगे? सोचकर बतायें।*
- *विवादास्पद एवं संवेदनशील मुद्दों पर बोलने से पहले सोचना ताकि लोगों की भावनायें एवं आस्थायें आहत न हो।*
- अपने संवेगों को अभिव्यक्त करने में पर्याप्त सावधानी / सजगता बरतनी चाहिए।
- *दूसरों के संवेगों और उनकी भावनाओं को समझने के लिए यह आवश्यक है कि उनकी बात को धैर्यपूर्वक सुना और समझा जाए।*
- *संवेगों को अपने विचार प्रक्रिया से समन्वित करने का प्रयास करना चाहिए। मस्तिष्क और हृदय दोनों का उचित तालमेल उचित व्यवहार प्रक्रिया में उपयोगी सिद्ध होता है।*
- स्वतंत्र अभिव्यक्ति का अवसर मिलना चाहिए।
- सामाजिक संपर्क और प्रशिक्षण से लोगों का संवेगात्मक व्यवहार संतुलित, संयमित एवं सामाजिक बनाने का प्रयास होना चाहिए।
- दु:ख और विषाद के अवसर पर उपयुक्त शोक, संवेदना व्यक्त करें।
- गलती होने पर बहाने बनाने एवं भयभीत होने की बजाय डर की भावना को खुले रूप से व्यक्त करें।
- फिल्मों के माध्यम से भी व्यक्ति का संवेगात्मक विकास संभव है। आत्म जागरूकता और सामाजिक जागरूकता बढ़ाने में फिल्में सहायक हो सकती है।
- *संवेगात्मक बुद्धि की प्रश्नावलियों एवं उनके उत्तर संबंधी विभिन्न आयामों की नैतिक रूप से विवेचना कर लोगों में संवेगात्मक बुद्धि का विकास किया जा सकता है। यहाँ लोगों को यह बताना चाहिए कि इस परिस्थिति में व्यक्ति की क्या प्रतिक्रिया होनी चाहिए, क्या निर्णय लेना चाहिए और ऐसा निर्णय क्यों लेना चाहिए, क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए आदि।*
- संवेगात्मक बुद्धि के उचित विकास हेतु बड़ों को, स्वयं अपने आपको एक ऐसे मॉडल के रूप में प्रस्तुत करना चाहिए जिसका अनुकरण कर बालक संवेगात्मक रूप से बुद्धिमान बन सके।
- संवेगात्मक विकास हेतु स्वस्थ्य शारीरिक विकास आवश्यक है। कमजोर एवं बीमार बच्चे संवेगात्मक रूप से अधिक असंतुलित और असमायोजित हो जाते हैं।
- पारिवारिक वातावरण, सदस्यों का आपसी संबंध, विद्यालय का वातावरण, अध्यापक की कार्य प्रणाली तथा छात्रों के साथ उनके

व्यवहार का बच्चे के संवेगात्मक बुद्धि के विकास पर असर डालता है।

- बालकों की संवेगात्मक शक्तियों के उचित प्रकाशन और अभिव्यक्ति के लिए उन्हें गैर-पाठ्यक्रम क्रियाओं (खेलकूद, नाटक, संगोष्ठी, वाद-विवाद, समसामयिकी मुद्दों पर चर्चा) तथा रोचक क्रियाओं के द्वारा उचित अवसर प्रदान किया जाना चाहिए।
- बालकों में दूसरों के साथ वैचारिक आदान-प्रदान करने और आपसी संबंध बनाने हेतु उचित सामाजिक कौशलों का विकास किया जाना चाहिए।
- बालकों को प्रारंभ से ही अपनी भावनाओं और संवेगों के ऊपर उचित नियंत्रण रखने का प्रशिक्षण देना चाहिए। प्रशिक्षण के क्रम में सलाह एवं निर्देश के साथ-साथ सीमित या नियंत्रित मात्रा में दंड एवं विरोध सम्मिलित किया जा सकता है।
- भारतीय संस्कृति में विद्यमान अनेक महत्वपूर्ण शीलगुणों जैसे बड़ों का सम्मान करना, देखभाल करना, अध्यापकों के प्रति श्रद्धा का भाव आदि सांवेगिक अभिव्यक्तियों को इंगित करता है। जैन दर्शन में तो संवेगों का प्रबंधन और नियमन करने वाले व्यक्ति को जितेन्द्रीय की संज्ञा दी जाती है। भारतीय परंपरा में प्रचलित धर्म, व्रत आदि भी व्यक्ति को अपने अंतर्वैयक्तिक संबंधों में सांवेगिक बुद्धि की अवधारणा को ही बताते हैं। भारतीय दार्शनिक परंपरा में अज्ञान तथा राग-द्वेष को जीवन के दु:खों का मूल कारण माना गया है। जैन दर्शन में बंधन के निराकरण हेतु 'त्रिरत्न' अर्थात् सम्यक् दर्शन, ज्ञान और चरित्र पर बल दिया गया है।

मनुष्यों के आचरण के नियमन के लिए बौद्ध दर्शन में पंचशील की अवधारणा दिखाई देती है। योग दर्शन में प्राणायाम के माध्यम से अपने मनोभावों को नियंत्रित करने की बात की गई है।

केस स्टडी: किसी पर्वतीय क्षेत्र के नगर में कोई बड़ी प्राकृतिक आपदा आती है। वहां राहत एवं पुनर्निर्माण कार्य के लिए राज्य एवं सरकार के अधिकारियों के बीच और विभिन्न विभागों के बीच अच्छे परस्पर सहयोग की जरूरत है। आपदा कार्य में सहायता की रणनीति बनाने के लिए अधिकारियों की मीटिंग बुलाई जाती है। इसमें किसी एक विभाग के प्रमुख द्वारा दूसरे विभाग के प्रमुख पर कार्यों में लापरवाही बरतने का इल्जाम लगाया जाता है। इस क्रम में उन दोनों के बीच कठोर शब्दों का इस्तेमाल होने लगता है। मीटिंग में हंगामा होने लगता है। यदि आप उस मीटिंग के प्रमुख हैं तो फिर आप ऐसी स्थिति में क्या करते? अपने निर्णय लेने के औचित्य को स्पष्ट करें।

Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

बुद्धि एवं बुद्धि के प्रकार

बुद्धि (Intelligence) मनुष्य की वह विवेक पूर्ण क्षमता है जिसका आशय सीखने, उद्देश्यपूर्ण ढंग से काम करने, तर्कपूर्ण ढंग से सोचने एवं वातावरण के साथ प्रभावपूर्ण ढंग से अनुक्रिया करने की योग्यता से है। इसमें जीवन की नवीन समस्याओं, चुनौतियों एवं परिवर्तित स्थितियों को समझने, उनका सामना करने, उपलब्ध संसाधनों का प्रभावी ढंग से उपयोग करने, समस्या का समाधान करने तथा वातावरण से समायोजन करने की सामान्य मानसिक योग्यता का भाव निहित है।

संक्षेप में बुद्धि का आशय पर्यावरण को समझने, सविवेक चिंतन करने तथा किसी चुनौती के सामने होने पर उपलब्ध संसाधनों का प्रभावी ढंग से उपयोग करने की व्यापक क्षमता से है।

बुद्धि में निम्न प्रकार की योग्यताएं सन्निहित होती है-

1. सीखने की योग्यता (Ability to learn)
2. अमूर्त्त चिन्तन की योग्यता (Ability to think abstractly)
3. समस्या का समाधान करने की योग्यता (Ability to solve problems.)
4. अनुभव से लाभ उठाने की योग्यता (Ability to profit by experience)
5. सम्बन्धों को समझने की योग्यता (Ability to understand relationships)
6. अपने वातावरण से सामंजस्य करने की योग्यता (Ability to adjust to one's environment)

बुद्धि लब्धि (Intelligence Quotient)**:** बुद्धि लब्धि किसी व्यक्ति की मानसिक अभिवृद्धि की मात्रा को प्रकट करती है। किसी व्यक्ति की मानसिक आयु को उसकी वास्तविक आयु (कालानुक्रमिक आयु/Chronological Age) से भाग देने के बाद उसमें 100 से गुणा करने से उसकी बुद्धि लब्धि प्राप्त हो जाती है।

$$\text{बुद्धि लब्धि (IQ)} = \frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{वास्तविक आयु}} \times 100$$

बुद्धि के प्रकार (Kinds of Intelligence)

संज्ञानात्मक बुद्धि (Cognitive intelligence) : पढ़ने, लिखने, तर्क करने, अमूर्त्त चिंतन करने, समस्या समाधान करने, योजना बनाने तथा संश्लेषण और विश्लेषण करने की बौद्धिक योग्यता ही संज्ञानात्मक बुद्धि है। जैसे- गणितीय समस्याओं को हल करना।

सामाजिक बुद्धि (Social intelligence) : सामाजिक संबंधों को समझने, अपने से बड़े, बुजुर्गों, बच्चों, महिलाओं एवं समाज के कमजोर वर्गों के प्रति समुचित व्यवहार करने, सामाजिक परिस्थितियों के साथ प्रभावपूर्ण समायोजन करने तथा समाजिक समस्याओं और मुद्दों का सहयोगपूर्ण सकारात्मक समाधान करने की योग्यता ही सामाजिक बुद्धि है।

संवेगात्मक बुद्धि का आशय

संवेगात्मक बुद्धि से तात्पर्य व्यक्ति विशेष की उस समग्र क्षमता से है, जो उसे उसकी विचार प्रक्रिया का उपयोग करते हुए अपने तथा दूसरों के संवेगों को जानने, समझने तथा प्राप्त सूचनाओं के अनुसार अपने चिंतन और व्यवहार में सामंजस्य स्थापित करते हुए वांछित अनुक्रिया करने में सक्षम बनाता है। संक्षेप में ***यह संवेगों एवं आवेगों का बौद्धिक नियमन एवं प्रबंधन है।*** इसमें हृदय (दिल) और मस्तिष्क (दिमाग) के मध्य संतुलन एवं सामंजस्य का भाव है ताकि विभिन्न परिस्थितियों में यथोचित व्यवहार हो सके।

भावनात्मक बुद्धि का प्रशासन और शासन में उपयोग और प्रयोग

प्रशासन में अनेक अवसरों पर अधिकारियों को लोगों से संवाद करना पड़ता है। संवेगात्मक बुद्धि युक्त अधिकारी उनकी समस्याओं एवं चिंताओं को धैर्यपूर्वक सुनता और समझता है। वह न तो असंवेदनशील होकर निष्क्रिय होता है और न ही भावनाओं में बहकर कोई निर्णय लेता है। वह यथोचित प्रक्रिया का पालन करते हुए, निर्णय के प्रभाव और दूसरों की अपेक्षाओं को ध्यान में रखकर निष्पक्ष अनुक्रिया करता है। यदि अधिकारी में सांवेगिक बुद्धि की कमी हो तो फिर न तो वह उनकी भावनाओं को ठीक से समझ पायेगा और न ही उनकी समस्याओं के निदान हेतु कोई सम्यक् कदम उठा पायेगा।

- संवेगात्मक बुद्धि, प्रशासनिक अधिकारी में सहयोग, समायोजन, संवेदनशीलता, अभिप्रेरणा, परानुभूति, संबंध-प्रबंधन एवं नेतृत्व की भावना एवं क्षमता बढ़ाती है।
- उच्च संवेगात्मक बुद्धि से युक्त अधिकारी विपरीत परिस्थितियों में भी निराश नहीं होता है। समस्याओं को चुनौती के रूप में लेता है। स्वयं पहल करते हुए अपने सहकर्मियों को भी अभिप्रेरित करता है और जिम्मेदारी पूर्वक अपने लक्ष्य को पूरा करने का प्रयास करता है। इस क्रम में अच्छे कर्मों के लिए प्रोत्साहन और गलत कार्यों में संलग्न कर्मियों को हतोत्साहित करता है।
- लोगों की समस्याओं को धैर्यपूर्वक सुनता है, संवेदनशीलता का परिचय देता है तथा भावनाओं में बहकर, जज्बाती होकर कोई कदम नहीं उठाता।
- जनता के लिए उपयोगी कार्यक्रमों में उनकी भागीदारी बढ़ाने के लिए उनको प्रोत्साहित करता है।
- नवाचार के लिए जागरूक एवं प्रयत्नशील रहता है।

संवेगात्मक बुद्धि की उपयोगिता

1. संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति के जीवन को सुखमय व शांतिप्रद बनाने में सहायक होती है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों एवं कार्य-स्थल पर मिलने वाली सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका इसी की होती है।
2. कामकाज की दुनिया में निपुणता तथा दक्षता प्राप्त कराने में भी संवेगात्मक बुद्धि का ही अधिक योगदान पाया जाता है।
3. अपने तथा दूसरों के संवेगों के प्रति सही जानकारी एवं सजगता, संवेगों का उचित प्रबंध दूसरों के साथ संबंधों को ठीक प्रकार से बनाये रखने जैसे कार्यों में संवेगात्मक बुद्धि ही सबसे अधिक सहायक होती है।
4. संवेगों का अनुचित दमन नहीं होना चाहिए। ग्रीक दार्शनिक *अरस्तू* का कथन है- *कोई भी व्यक्ति क्रोध कर सकता है- यह बहुत आसान है परंतु सही व्यक्ति के साथ, सही मात्रा में, सही समय पर, सही प्रयोजन हेतु, सही ढंग से, क्रोध करना आसान नहीं है।*

सांस्कृतिक बुद्धि (Cultural intelligence) : सांस्कृतिक मानकों, आदर्शों, प्रचलनों, रीति-रिवाजों, परम्पराओं, विश्वासों, कला, साहित्य, दर्शन आदि की समझ, अनुकूलन एवं समायोजन की योग्यता या क्षमता ही सांस्कृतिक बुद्धि है।

गार्डनर का बहु-बुद्धि का सिद्धांत (Gardner's theory of multiple intelligences)

महत्वपूर्ण पुस्तक: Frames of Mind: The Theory of Multiple Intelligences

मनुष्यों के विभिन्न प्रकार की प्रतिभाओं के बारे में अमेरिकी मनोवैज्ञानिक हावर्ड गार्डनर (Howard Gardner) द्वारा प्रस्तुत सिद्धांत 'बहु-बुद्धि का सिद्धांत' कहलाता है। उनके अनुसार, बुद्धि कोई एक तत्व नहीं है बल्कि भिन्न-भिन्न प्रकार की बुद्धियों का अस्तित्व होता है। आशय है कि बुद्धि स्वरूपत: एकाकी (Singular) नहीं है बल्कि बहुविध (Plural) है।

किसी समस्या का समाधान खोजने के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार की बुद्धियाँ आपस में अंत-क्रिया करते हुए साथ-साथ कार्य करती हैं। प्रत्येक व्यक्ति के मस्तिक में विभिन्न प्रकार की प्रतिभाएं है जो स्वतंत्र रूप से या साथ में काम करते है। अपने-अपने क्षेत्रों में असाधारण योग्यताओं का प्रदर्शन करने वाले अत्यंत प्रतिभाशाली व्यक्तियों का गार्डनर ने अध्ययन किया और इसके आधार पर **आठ प्रकार की बुद्धियों का वर्णन** किया। ये निम्नलिखित हैं-

भाषागत (linguistic) (भाषा के उत्पादन और उपयोग के कौशल) - यह भाषा प्रयोग की कुशलता, शब्दों के विन्यास एवं अर्थ की समझ, सुनने, बोलने, लिखने अपने विचारों को प्रकट करने तथा दूसरे व्यक्तियों के विचारों को समझने हेतु प्रवाह तथा नम्यता के साथ भाषा का उपयोग करने की क्षमता है। जिन व्यक्तियों में यह बुद्धि अधिक होती है वे 'शब्द-कुशल' शिष्ट वक्ता होते हैं। ऐसे व्यक्ति शब्दों के भिन्न-भिन्न अर्थों के प्रति संवेदनशील होते हैं, अपने मन में भाषा के बिंबों का निर्माण कर सकते हैं और स्पष्ट तथा परिशुद्ध भाषा का उपयोग करते हैं। लेखकों, पत्रकारों, कवियों, उत्प्रेरकों (Motivator) आदि में यह बुद्धि अधिक मात्रा में होती है।

तार्किक-गणितीय (Logical-Mathematical) (वैज्ञानिक चिंतन तथा समस्या समाधान के कौशल) - इस प्रकार की बुद्धि की अधिक मात्रा रखने वाले व्यक्ति तार्किक तथा आलोचनात्मक चिंतन कर सकते हैं। वे अमूर्त तर्कना कर लेते हैं और गणितीय समस्याओं के हल के लिए प्रतीकों का उपयोग अच्छी प्रकार से कर लेते हैं। वैज्ञानिकों, कंप्यूटर प्रोग्रामर आदि में इस प्रकार की बुद्धि अधिक पाई जाने की संभावना रहती है।

स्थानिक या देशिक (Spatial) (दृश्य बिंब तथा प्रतिरूप निर्माण के कौशल) - यह मानसिक बिंबों को बनाने, उनका उपयोग करने तथा उनमें मानसिक धरातल पर परिमार्जन करने की योग्यता है। इस बुद्धि को अधिक मात्रा में रखने वाला व्यक्ति सरलता से देशिक सूचनाओं को अपने मस्तिष्क में रख सकता है। विमान-चालक, नाविक, मूर्तिकार, चित्रकार, वास्तुकार, आर्किटेक्ट्स, शल्य-चिकित्सक आदि में इस बुद्धि की मात्रा अधिक होती है।

संगीतात्मक (Musical) (सांगीतिक लय तथा अभि-रचनाओं के प्रति संवेदनशीलता) - विभिन्न ध्वनियों की पहचान, लय, ताल, स्वर, राग, गायन के उतार-चढ़ाव की समझ तथा नये राग एवं धुनों के सृजन के प्रति संवेदनशील होते हैं। वादक, गायक, संगीतकार आदि में इस बुद्धि की उच्च मात्रा होती है।

शारीरिक-गतिसंवेदी (Bodily-Kinaesthetic) (संपूर्ण शरीर अथवा उसके किसी अंग की लोच का उपयोग करना तथा उसमें सर्जनात्मकता प्रदर्शित करना) - किसी वस्तु अथवा उत्पाद के निर्माण के लिए अथवा मात्र शारीरिक प्रदर्शन के लिए संपूर्ण शरीर अथवा उसके किसी एक अथवा एक से अधिक अंग की लोच तथा पेशीय कौशल की योग्यता शारीरिक-गतिसंवेदी योग्यता कही जाती है। धावकों, नर्तकों, अभिनेताओं/अभिनेत्रियों, खिलाड़ियों, जिमनास्टों तथा शल्य-चिकित्सकों में इस बुद्धि की अधिक मात्रा पाई जाती है।

अंतर्वैयक्तिक (Interpersonal) (दूसरे व्यक्तियों के सूक्ष्म व्यवहारों के प्रति संवेदनशीलता) - इस योग्यता द्वारा व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों की अभिप्रेरणाओं या उद्देश्यों, भावनाओं तथा व्यवहारों का सही बोध करते हुए उनके साथ मधुर संबंध स्थापित करता है। मनोवैज्ञानिक, परामर्श, राजनीतिज्ञ, सामाजिक कार्यकर्ता तथा धार्मिक नेता आदि में उच्च अंतर्वैयक्तिक बुद्धि पाए जाने की संभावना होती है।

अंत-व्यक्ति (Intrapersonal) (अपनी निजी भावनाओं, अभिप्रेरणाओं तथा इच्छाओं की अभिज्ञता) - इस योग्यता के अंतर्गत व्यक्ति को अपनी शक्ति तथा कमजोरियों का ज्ञान और उस ज्ञान का दूसरे व्यक्तियों के साथ सामाजिक अंत-क्रिया में उपयोग करने का ऐसा कौशल सम्मिलित है जिससे वह अन्य व्यक्तियों से प्रभावी संबंध स्थापित करता है। इस बुद्धि की अधिक मात्रा रखने वाले व्यक्ति अपनी अनन्यता या पहचान, मानव अस्तित्व और जीवन के अर्थों को समझने में अति संवेदनशील होते हैं। दार्शनिक तथा आध्यात्मिक नेता आदि में इस प्रकार की उच्च बुद्धि देखी जा सकती है।

प्रकृतिवादी (Naturalistic) (पर्यावरण के प्रागतिक पक्ष की विशेषताओं के प्रति संवेदनशीलता) - इस बुद्धि का तात्पर्य प्रागतिक पर्यावरण से हमारे संबंधों की पूर्ण अभिज्ञता से है। विभिन्न पशु-पक्षियों तथा वनस्पतियों के सौंदर्य का बोध करने में तथा प्रागतिक पर्यावरण में सूक्ष्म विभेद करने में यह बुद्धि सहायक होती है। शिकारी, किसान, पर्यटक, वनस्पतिविज्ञानी, प्राणीविज्ञानी और पक्षीविज्ञानी आदि में प्रकृतिवादी बुद्धि अधिक मात्रा में होती है।

अतिरिक्त प्रतिभाएं : बाद में गार्डनर ने दो और प्रकार की बुद्धियों को इसमें सम्मिलित करने के योग्य माना। ये हैं:-

अस्तित्व सम्बंधी प्रतिभा (Existengial Intelligence) : जीवन, मृत्यु, परम वास्तविकताओं और जीवन की समस्याओं के बारे में उत्सुक हैं।

नैतिक प्रतिभा (Moral Intelligence): उन नियमों, व्यवहार और दृष्टिकोण के साथ जुड़ी हुई हैं जो सभी के जीवन पवित्रता को नियंत्रित करती हैं।

लाभ या महत्व :

1. गार्डनर के बहु-बुद्धि सिद्धांत का प्रभाव शिक्षा के क्षेत्र में पड़ा। इसने शिक्षकों एवं शिक्षाविदों को बुद्धि के विविध रूपों/पक्षो को जानकार शिक्षण की नवीण पद्धतियों एवं रास्तों को खोजने के लिए प्रेरित किया।
2. व्यक्ति के सामर्थ्य एवं योग्यता के सर्वागींण मूल्यांकन का रास्ता प्रशस्त किया। किसी एक पक्ष में असफलता से व्यक्ति के बारे में निर्णय नहीं लिया जा सकता।
3. लोगों को उनकी आवश्यकताओं, रूचियों एवं प्रतिभाओं के आधार पर उन्हें सिखने के विश्वसनीय अवसर प्रदान करना।
4. छात्रों के क्षेत्र विशेष में योग्यता को देखते हुए उन्हें उस क्षेत्र के विशेषज्ञ बनने के लिए प्रोत्साहित करना।
5. अपनी विभिन्न प्रतिभाओं में संतुलन स्थापित करना।